



एग्री आर्टिकल्स

(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)

वर्ष: 03, अंक: 01 (जनवरी-फरवरी, 2023)

www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध

© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एन.: 2582-9882

फालसा की खेती

(*चंद्र सिंह चौधरी¹, प्रियंका कुमारी जाट², मुरारी लाल चोपड़ा², राजेश चौधरी³ एवं सुरेश कुमार जाट⁴)

¹कृषि विभाग राजस्थान सरकार

²उद्यान विभाग, राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान, दुर्गापुरा, जयपुर

³उद्यान विभाग, श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि महाविद्यालय, जोबनेर, जयपुर

⁴सहायक प्रोफेसर, कृषि विश्वविद्यालय, कोटा

*संवादी लेखक का ईमेल पता: cschoudhary8656@gmail.com

फालसा भारत का स्वदेशी फल है और पूर्व और उत्तर भारत में अलग-अलग नामों से जाना जाता है। इसकी खेती शहरों / कस्बों के आसपास के क्षेत्रों में अधिक लोकप्रिय है। फालसा फल को इसके अम्लीय स्वाद, रंगीन स्क्वैश और सिरप के लिए पसंद किया जाता है। फालसा एक सुखा सहनशील फल है जिसको मल्टीस्टोरी फसल चक्र और बागवानो में अंतरवर्ती फसल (Catch crop) के रूप में भी उगाया जाता है। फालसा फल अत्यधिक जल्दी खराब होने वाला फल है इसलिए इसको भण्डारण करने की बहुत अधिक जरूरत होती है! फालसा फल अम्लीय प्रवृत्ति का होता है जो विटामिन -A और C का अच्छा पाया जाता है। इसका उपयोग प्यास बुझाने और जलन कम करने, प्यास, सूजन, हृदय और रक्त विकार को दूर करने के लिए किया जाता है। फालसा की छाल से प्राप्त श्लैष्मिक अर्क (mucilaginous extract) प्रयोग शर्करा को साफ करने के लिए किया जाता है। फालसा में लाल रंग एन्थोसाइनिन के कारण होता है।

क्षेत्र और उत्पादन Area and Production)

यह मामूली फल है और प्रत्येक राज्य में बहुत छोटे पैमाने पर खेती की जा रही है। हालाँकि, पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश में इसकी खेती व्यावसायिक रूप से शहरों के पास की जाती है। पंजाब में फालसा के तहत केवल 30 हेक्टेयर में 196 टन वार्षिक उत्पादन होता है।

उपयोग (Use)

परिपक्व फालसा फल परिपक्वता के रंग में बैंगनी होते हैं और झाड़ियों पर पकने पर काले हो सकते हैं। फालसा को प्रकृति में एंटीऑक्सिडेंट माना जाता है क्योंकि यह अपने रंगीन फल और रस के कारण होता है। पूरा फल बीज के साथ खाया जाता है। फलों में 11-12% टीएसएस और 3% अम्लता के साथ 55 प्रतिशत रस होता है। पके फलों का सेवन ताजे के रूप में किया जाता है। रस और स्क्वैश ग्रीष्मकाल में फिर से प्रकाशित होते हैं। दवाओं की यूनानी प्रणाली में विभिन्न बीमारियों को ठीक करने की सलाह दी जाती है। गठिया की बीमारी को ठीक करने के लिए फालसा की जड़ों का उपयोग किया जाता है। टोकरियाँ तैयार करने के लिए शूट का उपयोग किया जा सकता है।

वनस्पति विज्ञान

फालसा जीनियस ग्रेविया का है। यह उत्तर भारत में पर्णपाती झाड़ी है। इसे झाड़ी और एकल तने वाले छोटे पेड़ के रूप में प्रशिक्षित किया जा सकता है। दक्षिण भारत में यह सदाबहार है। यह जिला सर्दियों

के साथ क्षेत्रों में बेहतर प्रदर्शन करता है। तना कठोर और भंगुर होता है। छाल में श्लेष्मा रस होता है, जिसका उपयोग चीनी या गुड़ को शुद्ध करने के लिए किया जाता है। पत्तियां चौड़ी खुरदरी और हल्के हरे रंग की होती हैं, जिसमें दोनों तरफ बाल होते हैं। फूल छोटे, पीले रंग के, पत्ती की धुरी में पेडन्यूल्स पर गुच्छों में दिखाई देते हैं। उत्तर भारत में अप्रैल में फूल दिखाई देते हैं। फल जून में पकता है और एक या दो कठोर बीजों के साथ पिया जाता है।

जलवायु (Climate)

फालसा में फलन के दौरान गर्म और शुष्क जलवायु की आवश्यकता होती है। सर्दियों में यह पोधा निष्क्रिय हो जाता है। जून में उच्च तापमान फल पकने में मदद करता है। औसतन तापमान 23-24°C होना आवश्यक है फालसा के पोधे 44°C तक तपमान को सहन करने क्षमता है! यह अल्प सिंचाई परिस्थितियों में अच्छी वृद्धि करता है।

मिट्टी (Soil)

फालसा को विभिन्न प्रकार की मिट्टी में उगाया जा सकता है, (ठीक रेत, मिट्टी या चूना पत्थर सहित) यहां तक क्षारीय मृदा में भी उगाया जा सकता है। लेकिन मिट्टी की उर्वरता बहुत खराब नहीं होनी चाहिए। अगर समृद्ध दोमट मिट्टी हो तो फल उत्पादन अधिक होता है। उपयुक्त मिट्टी का पीएच 6.1 से 6.5 (हल्का अम्लीय) होता है

किस्मे (Variety):

प्रमुख किस्मे 1. लोकल 2. शरबती 3. टाल (Tall) 4. ड्वार्फ (Dwarf) इत्यादी है ! “थार प्रगति” किस्म हाल में ही उत्पन्न किस्म हैं! कोई अलग किस्म विकसित नहीं की गई है। यहां तक कि अगर पौधों को बीज से उठाया जाता है और फूलों को पर- परागण किया जाता है।

प्रवर्धन (Propagation)

फालसा को प्रवर्धन बीज के माध्यम से किया जाता है। प्रवर्धन का उपयुक्त समय जुलाई से अगस्त होता है! फालसा में बीज को 90-100 दिन तक भण्डारित किया जा सकता है उसके बाद बीज की गुणवत्ता में कमी आ जाती है बीज को बागवानी में डालने के बाद 22दिन में उग जाते है श्लेष्म की उपस्थिति के कारण कलमों को जड़ना मुश्किल है। कलम विधि से जनवरी माह में आईबीए से उपचारित करके भी प्रवर्धन कर सकते हैं। बोल्ड सीड्स जुलाई के दौरान 90 प्रतिशत अंकुरण देते हैं। उभरे हुई क्यारियों में बीज को 10 cm की दुरी पैर बोना व लाइनों से लाइनों की दुरी 2cm रखनी चाहिये। बीज की रोपण के समय गहराई 2 सेमी होनी चाहिए। मृदा + F.Y.M 50: 50 अनुपात के मिश्रण के साथ बीज को कवर करें।

बुवाई के तुरंत बाद सिंक्रलर से पानी डालें। क्यारी में जल भराव न होने दे नहीं तो जड़ सड़न कवक पाइथियम रोग प्रकट हो जाता है। बीज अंकुरित होने के बाद 1% बाविस्टिन घोल का छिडकाव करे। सफेद चींटियों से बचने के लिए बीज की बुवाई के 30 दिनों बाद डर्बिन 20EC (क्लोरोफायरोफोस) @ एल0 मिली / ली पानी का छिडकाव करे। जनवरी में रोपाई के लिए सीडिंग तैयार हो जाती है।

रोपण (Plating)

जनवरी में तैयार किए गए गड्डों में खुले छोड़ देना चाहिये। तथा उसके बाद स्वस्थ अंकुरित पोधो को गड्डो में प्रत्यारोपण कर दिया जाता है पोधो का रोपण 1.0 x 1.5 मीटर लाइनों की दुरी पर करना चाहिये। 0.5 मीटर गहरे और एक ही व्यास के वास्तविक रोपण गड्डों से एक महीने पहले तैयार किया जाता है। रोपण के बाद मिट्टी को जड़ों के चारों ओर फेलाकर हल्की सिंचाई कर देनी चाहिये।

Traning and Pruning (काट- झांट)

फालसा में अत्यधिक काट- झांट की जरूरत होती है फालसा में काट- झांट का उचित समय दिसम्बर से जनवरी होता है उतरी भारत में फालसा को आमतौर पर एक झाड़ी के रूप में काट- झांट कि जाती है। यह एक तने के साथ शीर्ष प्रणाली से काट- झांट कि जाती है। एकल तने(Single stem) की ऊंचाई 90 सेमी से 1.0 मी तक रखी जाती हैं। यह पौधे झाड़ी प्रणाली की तरह ही इस ऊंचाई से ऊपर अंकुर पैदा करता है। उत्तर भारत में, फालसा हर साल जनवरी के दौरान छंट जाता है। जब इसे एक बुश के रूप में प्रशिक्षित किया जाता है तो अंकुरों को जमीनी स्तर से 2- 3 सेंटीमीटर तना छोड़ दिया जाता है। यहाँ से तना में कई कलिकाये निकलतती हैं मार्च-अप्रैल में इन शूटों पर फूल आने लगते है।

सिंचाई (Irrigation)

फल की फसल के बाद फालसा सूखे की स्थिति को काफी अच्छी तरह से सहन कर सकता है। उच्च फल प्राप्त करने के लिए इसे अप्रैल से जून के दौरान 20 दिनों के नियमित अंतराल पर सिंचाई की आवश्यकता होती है। बरसात के मौसम और सुस्ती में कोई सिंचाई नहीं की जा सकती है।

खाद और उर्वरक (Manure एंड fertilizer)

जनवरी में काट- झांट के बाद प्रत्येक झाड़ी के लिए 5 किलोग्राम गोबर की खाद डालनी चाहिये । उम्र के आधार पर झाड़ियों को 50 से 100 ग्राम यूरिया दो भागों में यानी मार्च और अप्रैल के दौरान लगाया जा सकता है। उच्च नत्रजन की मात्रा से वानस्पतिक वृद्धि होती है जो अच्छे फलन के लिए वांछनीय नहीं है। जब झाड़ियाँ चार साल की हो जाती हैं, तो खुराक को विभाजित खुराक में 200 ग्राम तक बढ़ा देती हैं। मार्च में 100gm लगायें और 100g अप्रैल में महीनों के अंतराल पर देनी चाहिये।

खरपतवार नियंत्रण (Weed control)

फालसा को दो होइंग की आवश्यकता होती है एक जनवरी में छंटाई के बाद और दूसरा अप्रैल-मई में। यदि बरसात के मौसम में पौधों की वृद्धि की तीव्रता बढ़ जाती है, तो ग्रामोक्सोन (पैराक्वेट) @ 6-7 मिली / ली का छिड़काव करें। वृक्षारोपण में खाली स्थानों में पानी का उपयोग किया जाता है जो सिर प्रणाली पर प्रशिक्षित होते हैं। हालांकि, झाड़ी प्रशिक्षित पौधों में किसी भी जड़ी बूटी का छिड़काव करने की आवश्यकता नहीं है। पत्ते की छाया खरपतवारों की वृद्धि पर नियंत्रण रखती है।

कटाई व भण्डारत (Harvesting and Storage)

फालसा फलों के एक समान पकने के लिए, शूट के एप को आगे की शूटिंग के विकास की जांच के लिए मई के मध्य में पिन किया जा सकता है। फल जून के पहले सप्ताह में पकने लगते हैं और एक महीने तक जारी रहते हैं। फलों की कटाई सप्ताह में दो बार करनी चाहिए। फलों को 2 किलोग्राम आकार के छोटे टोकरीयों में या पैक में पैक किया जाता है। फालसा फल प्रकृति में खराब होने वाला है, इसलिए इसे कटाई के तुरंत बाद बाजार में पहुंचाना चाहिए। उत्तर भारत में फूल से फल 45-70 दिन में मई से जून माह में बनने लगते है जबकि दक्षिणी भारत में फल नवम्बर से दिसम्बर और जून से जुलाई माह में आते है फलो लो 7° C तापमान पर 7 दिन के लिए भण्डारित किया जा सकता है

उपज (Yield)

5 से 10 किलो प्रति पोधा और 7.5 से 15 टन/ हेक्टेयर उपज प्राप्त होती !

कीट और रोग (Insect and Disease)

पत्ती दबा रोग (Leaf spot disease):- यह सरोकोस्पोरा ग्रेविए नामक कवक द्वारा होता है जिसपे छोटे-छोटे दब्बे पत्तियों पर दोनों तरफ बन जाते जिससे पत्तिया जल्दी ही गिर जाती है

रोकथाम:- डाईथेन Z-78 का 0.3 % की मात्रा और बलाईटोक्स 0.2 % की मात्रा का छिडकाव करना चाहिये !

मीली बग (Mealy bug):- यह कीट फालसा को अत्यधिक नुकसान पहुंचता है और फलन के समय अधिक नुकसान पहुंचता है !

रोकथाम :- मोनोक्रोटोफास 0.04 % का छिडकाव करना चाहिये !

Bark eating caterpilar:- यह छाल और शाखाओं में टनल बना लेता है!

रोकथाम:- टनल के छिद्रों में करोसिन तेल डालर और उसके बाद मिट्टी से बर दिया जाता है !

leaf eating caterpilar:- यह कीट पत्तियों को कंकाल की तरह कर दिया जाता !

रोकथाम:- कार्बायल 0.1% का छिडकाव करना चाहिये !